बुनियादी ढांचा मज़बूत हो, मिले करियर की सुरक्षा भी

■ **आज खेल** हिंदुस्तान की रग-रग में बसता है, लेकिन इस जुनून को मेडल में बदलने के लिए हमें वर्ल्ड क्लास फैसिलिटीज (विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे) की सख्त जरूरत है। दुनिया में लगातार नए-नए खेल सामने आ रहे हैं, लेकिन उनमें महारत हासिल करने में हमें अभी समय लगेगा। इसलिए, समझदारी इसी में है कि हम कुछ पारंपरिक और प्रचलित खेलों पर फोकस करें। इनमें क्रिकेट के अलावा फुटबॉल, हॉकी और ऐथलेटिक्स और कुछ अन्य खेल हैं। हमारे ऐथलीट्स में भी अद्भुत क्षमता है। हमें 5-6 चुनिंदा खेलों को प्राथमिकता देनी होगी और उनके लिए बेस्ट फैसिलिटीज मुहैया करानी होंगी।

चुनिंदा खेलों में मुहैया कराएं बेस्ट फैसिलटीज

सुविधाओं के साथ-साथ हमें युवाओं को सुरक्षित भविष्य का भरोसा देना होगा। अक्सर देखा जाता है कि भविष्य की अनिश्चितता के कारण कई होनहार बच्चे खेल की दुनिया से समय से पहले बाहर हो जाते हैं। जब तक उन्हें खेल में एक सुरक्षित करियर की तसल्ली नहीं होगी, तब तक वे अपना सब कुछ दांव पर नहीं लगाएंगे। पुराने समय में बैंक और पब्लिक सेक्टर कंपनियां खिलाड़ियों को स्थायी नौकरियां देती थीं, जिससे उन्हें एक सुरक्षा कवच मिलता था। आज भी हमें ऐसी ही किसी प्रभावी योजना की जरूरत है। यदि हम चीन जैसे देशों की खेल नीति को देखें, तो उन्होंने बुनियादी ढांचे और खिलाड़ियों की सुरक्षा पर काम करके ही आज खेलों में अपना दबदबा बनाया है। हमारे यहां टेबल टेनिस जैसे खेलों में भी अपार संभावनाएं हैं। नए और आधुनिक खेलों पर ध्यान हम बाद में भी दे सकते हैं, लेकिन फिलहाल हमें अपने पारंपरिक खेलों को मजबूत करना होगा। अगर हम चुनिंदा खेलों को प्राथमिकता दें, बेहतरीन सुविधाएं प्रदान करें और करियर का पक्का भरोसा दें, तो भारत को खेल जगत में टॉप के देशों में शामिल होने से कोई नहीं रोक सकता।